विशेष आलेख / सादर प्रकाशनार्थ

खट्टी मीठी यादें छोड़कर खत्म हो गया भारत का 43वां अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह

पणजी गोवा से लौटकर ब्रजभूषण चतुर्वेदी (बी.बी.सी.)

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर फिल्में संसार के हर परिवार, समाज, व्यक्ति, देश, मानवता एवं व्यकित्त्व को प्रभावित कर रही है। तकनीकी ज्ञान का सबसे ब.डा परिवर्तन फिल्म संसार में देखने को मिला। भारत का सिनेमा तो १०० वर्ष का बू.ढा होकर भी जवान हो गया। हर देश फिल्मों की भाषा में बातें कर रहा है एवं भारत में भी यही सिलसिला १९५२ से शुरू लेकर अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के रूप में २०१३ तक आ गया। इसी संदर्भ में देश के महानगरों बम्बई–दिल्ली–कोलकाता, चैन्नई, बैंगलुरू, हैदराबाद होता हुआ। विगत १० वर्षों से प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर गोवा के समुद्र किनारों तक पहुँच गया। गोवा की पहचान अन्य बातों के अलावा फिल्मों से भी होने लगी है। भारत का ४३वां अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह भी अपनी खट्टी मीठी यादों के साथ यादगार स्वरूप में खत्म हो गया। फिल्मों के यादगार सफर की कहानी बहुत अनूठी है। बस इस समारोह की सफलता इसी बात से सिद्ध होती है कि प्रेस एवं प्रतिनिधियों की संख्या १०२२१ होने से इसकी लोकप्रियता सिद्ध होती है, जो मेहमानों के भाग लेने का विश्व रेकार्ड बना रही है।

भारत सहित विश्व में ७० देशों की अपनी उत्कृष्ट फिल्मों के प्रदर्शन, विश्व की सर्वोत्तम चर्चित, पुरुस्कृत एवं सामाजिक परिवेश के साथ दर फ्रेम दर, फिल्मकारों से खुली चर्चाएं इस बात को बतलाती है कि समारोह कितना सफल रहा। भारत के फिल्म अभिनेता अक्षयकुमार के आतिथ्य में उद्घाटित, पौलेण्ड के प्रसिद्ध फिल्मकार जानूस्सि के लाईफ टाइम एचीवमेंट सम्मान (१० लाख नगद एवं सम्मान पत्र), सुप्रसिद्ध फिल्मकारों के जूटी सदस्यों की उपस्थिति में ग्यारह दिनों जहां उसकी सुगंध को फैलाया, वहीं मीरा नायर जैसी विश्व प्रसिद्ध फिल्मकार की नवीनतम् फिल्म ''द रिलेक्टेट फंडामेन्टलिस्ट'' से समापन बहुत कुछ कह रहा है। ग्यारह दिनों में (२० नवम्बर से ३० नवम्बर २०१२) तक चले इस समारोह में अनेकों देशों की फिल्म ने दर्शकों के दिल दिमाग को हिलाकर रख दिया। फीचर, नान फीचर, डाक्यूमेंट्री, मास्टर क्लासेस, विश्व सिनेमा, भारतीय पेनोरमा, भारत के फिल्म इतिहास की यादगार फिल्मों (पहली फिल्म दादा साहबे फालके की १९१३ में बनी 'राजा हरिश्चन्द्र' से लेकर २०१२ में बनी 'बर्फी') तक का सफर टर्की, फ्रांस, पुर्तगाल, अमेरिका, पोलैण्ड, हंगरी, चीन, थाईलैण्ड की यादगार फिल्में, हॉलीवुड–बॉलीवुड की फिल्मों का दिल दहलाने वाली कहानियां इस समारोह की यादों में चार चाँद लगा गई। फिल्में विशेषकर विश्व सिनेमा खण्ड जिसमें १९२ से अधिक सर्वाधिक चर्चित फिल्मों की शानदार बानगी बनी। आस्ट्रिया–जर्मनी–फ्रांस की ऑस्कर पुरस्कृत फिल्म 'अमोर' के साथ ही भारत की एम.एस. सत्थू द्वारा निर्देशित 'गरम हवा' डिजीटल डालवी (बलराज सहानी, फारुख शेख, ए.के. हंगल) एवं कोरियोग्राफर सरोज खान के जीवन पर बनी डाक्यूमेंट्री 'सरोज खान कहानी' ने सफलता–भी.ड, लोकप्रियता के वो झण्डे गा.ढे जिनकी प्रशंसा जितनी की जाए, कम ही लगेगी। 'टर्की' जिसकी सात फिल्में 'कंट्री फोकस खण्ड' में दिखाई गई मानवता, सद्भावना, विचारों की ऊँचाईयों का नया अध्याय लिख गई।

समारोह में जहाँ भारतीय पेनोरमा की बीस फिल्में अमिट छाप छो.ड गई। वहीं १०० वर्ष की यादगार फिल्मों का आकर्षण सफलता का नया अध्याय लिखा गया। 'राजा हरिशचन्द्र', 'अछूत कन्या', 'संत तुकाराम', 'कल्पना', 'चन्द्रलेखा', 'आवारा', 'पार्थर पंचाली', 'प्यासा, 'मेघा ढाका तारा', 'मुगल–ए–आजम', 'भुवन शोक', 'संस्कारा', 'पाकीजा', 'शोले', 'लगान', 'लगे रहो मुन्नाभाई', 'बर्फी' आदि ने तो भारत के सिनेमा इतिहास की सर्वोच्च लोकप्रियता पाई। छोटी–छोटी डाक्यूमेंट्री फिल्में जैसे संगीतकार रवि पर बनी फिल्म 'ड्रिमिंग ताजमहल', 'ऑल

इंडिया रेडियो', 'दास्तान–ए–आलमआरा', 'डांसिंग फीट' आदि ने बहुत प्रशंसा पाई। ये छोटी–छोटी फिल्में ब. डी फिल्मों से भी ज्यादा लोकप्रियता में आगे निकल गईं। सिंहावलोकन वर्ग में सौमित्रो चटर्जी, मुजफ्फर अली, मास्टर्स में श्याम बेनेगल की अंकुश, डी. रामानायडु की 'तोहफा' के साथ यश चौप.डा की 'धूल का फूल', देवानंद की 'गाईड', राजेश खन्ना की 'आनंद', अशोक मेहता की '३६ चौरंगी लेन', ए.के. हंगल की 'गुड्डी', फिल्मों में विदेशी दर्शकों ने भारी रुचि दिखाई।

विश्व सिनेमा में सत्तर देशों की फिल्मों की धूम रही, जिसमें इटली, डेनमार्क, फ्रांस, टर्की, पुर्तगाल, कनाडा, अमेरिका, इंग्लैण्ड की कई फिल्मों ने दर्शकों को बहुत प्रभावित किया। इस खण्ड में विश्व की अधिकांश फिल्में दिल जीत गई। जैसे 'पिंक', 'लाईफ ऑफ पाई', 'वारवाच', 'रिलेक्टेंट–फंडामेनेलिस्ट' देखकर दर्शक भाव विभोर हो गए। भारतीय पेनेरमा खण्ड में मलयालम, बंगला फिल्मों की झलक के दर्शन हुए। अनेकों फिल्म संस्थान की लगभग ६० फिल्में युवा फिल्मकारों में उत्साह का दर्शन करा गई। सुभाष घाई की मराठी की 'मीमासा' ने दर्शकों के बीच बहुत चर्चा करवाई।

समारोह में विभिन्न खण्डों में कुल मिलाकर ३५० से अधिक फिल्में दिखाई गईं। ओपन फोरम में जहां फिल्म के विभिन्न आयामों व विधाओं की चर्चाएं अनेकों फिल्मकारों व तकनीकी विद्या से जु.डे लोगों ने कहीं लेखक, समीक्षक श्री मोहन सिरोया की पुस्तक ''गोल्डन सौजोर्न बॉलीवुड वंडरलैंड'', प्रतापसिंह की सिनेमा का जादुई सफर, प्रदीप विश्वास की 'सिने कृति' आदि का विमोचन फेस्टील निर्देसक शंकर मोहन देव ने किया।

समारोह में लगभग १०० से अधिक फिल्मकारों ने अपनी फिल्मों के साथ ही अपने देश की फिल्म संस्कृति, कठिनाईयों की चर्चा की। एक अखरने वाली बात इस समारोह में देखने को मिली कि भारत में फिल्मकारों व कलाकारों की उपस्थिति नगण्य रही। अक्षय कुमार, तब्बू, इरफान खान, मीतावशिष्ट सहित जैकी श्राफ, ओमपुरी ही समारोह में आए, जबकि इन्हीं फिल्मोत्सव से अनेकों कलाकारों ने जन्म लेकर ऊँचाईयां पाई हैं। हम यह कहें कि हॉलीवुड उपस्थित रहा व बॉलीवुड गायब।

आने वाले समय फिल्म संसार का स्वर्णयुग होगा

फिल्म निर्माण के शहंशाह अशोक अमृत राज का दावा

विश्व का युवा वर्ग फिल्म निर्माण कला के प्रति बहुत रुचि ले रहा है, हॉलीवुड में नये–नये विचारों को लेकर भव्यता से मनोरंजन करती फिल्में दर्शकों की पसंद से बनाई जा रही है। हॉलीवुड ने 'स्लमडॉग मिलिनियम', 'लाईफ ऑफ पाई', 'गांधी' जैसी अनेकों फिल्मों का निर्माण हुआ है, एक से ब.ढकर एक नई तकनीक का इजाद हो रहा है। लगता है १०० वर्ष का सिनेमा अपना नया इतिहास लिखने जा रहा है। आज यह बात विश्व में सिनेमा में फिल्म निर्माण का नया इतिहास बॉलीवुड–हॉलीवुड में ५७ वर्ष की उम्र में १०० चर्चित फिल्में बनाने वाले अशोक अमृतराज ने कही। उन्होंने कहा भारत की फिल्में विश्व स्तर पर इसलिए नहीं पहचानी जा रही हैं क्योंकि उसमें अन्तर्राष्ट्रीय विषयों को छूने के विचार नहीं हैं। देश में अनेकों भाषाओं में फिल्म निर्माण हो रहा है, अच्छे कलाकारों की कमी नहीं हैं, लेकिन फिल्मों का निर्माण सिर्फ मनोरंजन से होता है या सम्बन्ध रखता है। अशोक अमृतराज ने कहा कि वे १९८० से लॉस एंजिल्स में हैं प्रतिवर्ष दो फिल्में बनाते भी हैं। उनकी कम्पनी में हर प्रकार के लेखक व तकनीशियन काम करते हैं। नये विषयों को गंभीरता से लिया जाता है, विश्व के दर्शक क्या चाहते हैं, यह ध्यान रखा जाता है फिर फिल्में बनती हैं। मैंने एक वर्ष में १६ फिल्में बनाने का विश्व रिकार्ड किया है।

यह समारोह की सबसे ब.डी पत्रकार वार्ता भी थी। जिसमें फेस्टीवल डायरेक्टर शंकर मोहनदेव, प्रसिद्ध फिल्मकार माईक पांडे एवं भुवन लोज भी उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि वे मदर टेरेसा, स्वामी विवेकाननन्द पर फिल्म बनाने का विचार भी रखते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि १०० से अधिक वर्षों में फिल्मों का स्वरूप बदला है, नई–नई तकनीक दस्तक दे रही है। हर हाथ में घ.डी है व घ.डी में सिनेमा प्रवेश कर गया है, अतः हमें सिनेमा का स्वर्णिम युग देखने का अवसर शीघ्र दिखने वाला है।

ग्यारह दिवसीय फिल्म समारोह का पटाक्षेप हुआ

विगत् ग्यारह दिनों से इस समारोह की धूम मची हुई थी। सत्तर देशों की १६२ फिल्में व भारत के १०० वर्ष सिनेमा के साथ १४० से अधिक लघु व फीचर फिल्में समारोह में दिखाई गईं। १०० से अधिक पत्रकार वर्ता में विश्व की जानी–मानी सिनेमा हास्तियों ने अपने विचार व्यक्त किए। ओपन फोरम में सिनेमा के भविष्य की बातों को टटोला गया, कई सिनेमा की पुस्तकों के विमोचन हुए। हॉलीवुड व बॉलीवुड की शानदार फिल्मों की धूम रही, दस हजार से अधिक डेलिगेट्स ने अपने नाम समारोह में दर्ज करवाए। ५०० से अधिक फिल्मों के लेख–समीक्षक इस भव्य समारोह में शरीक हुए, फिल्मकारों से व्यक्तिगत चर्चाएं हुईं। भारत के सिनेमा की प्रशंसा फिल्मों के माध्यम से की गई, फ्रांस, टर्की, इटली, दक्षिण कोरिया, केनेडा की फिल्मों की धूम मची रही और मीरा नायक की फिल्म 'द रिलेक्टेंट फंडामेंटलिस्ट' से समापन हुआ। समारोह गोवा–बाय बाय कहते हुए यादें छो.डकर बिदा ले गया।

समारोह में कुछ खटकने वाली बातें कुछ अच्छी बातें

- चूंकि भी.ड अधिक थी, अच्छी फिल्मों को देखने दर्शक–पत्रकार फिल्मकार भागते थे, लेकिन अव्यवस्था के कारण उन्हें फिल्में देखने का अवसर नहीं मिलने पर दु:खी होते थे।
- समारोह में दिन में अनेकों बार सुरक्षा कारणों से तलाशी ली जाती थी, दर्शक इससे बहुत दु:खी थी।
- पहली बार उद्घाटन व समापन के लिए विशाल एयर कंडीशन (एसी) टेंट बनाया गया था, जहां करीब चार हजार दर्शक बैठ सकते थे व मंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्भव हो सके।
- समारोह में एक करो.ड दस लाख के पुरस्कार बांटे गए, जो राशि विश्व में सर्वाधिक है।
- उद्घाटन व समापन की फिल्मों का कला अकादमी में प्रदर्शन होने से सिर्फ नौ सो मेहमान ही प्रवेश पा सके। कई को फिल्म देखने का अवसर ही नहीं मिला।
- समारोह में अंग्रेजी बुलेटिन की प्रशंसा होती रही, हिन्दी बुलेटिन लगता था, कुछ लोगों को उपकृत करने के लिए निकाला गया, जिसमें फिल्मों की चर्चाएँ कम सिर्फ वे ही बातें लिखी गईं, जो पूर्व में हो चुकी थीं या लिखी जा सकती थीं। जो समारोह में नहीं आए उनके लेख लम्बे–लम्बे छापे गए। वैसे हिन्दी की दुर्दशा भी समारोह में दिखाई दी।
- समारोह में भारत के हिन्दी सिनेमा के कलाकारों की उपस्थिति नगण्य रही, जिससे वातावरण में गर्माहट नहीं देखी गई।
- गोवा में मुख्य मंत्री श्री मनोहर पारीकर, उनके सहयोगी व कला अकादमी के प्रमुख विष्णु वाद्य, समारोह के प्रमुख शंकर मोहन देव, गोवा की इंटरटेनमेंट, सोसायटी प्रमुख मनोज श्रीवास्तव आदि की सक्रियता व सहयोग की सभी ने प्रशंसा की।

प्रस्तुति– बृजभूषण चतुर्वेदी (बी.बी.सी.), ३०१, प्रभात रेसीडेंसी, तिलकपथ मेनरोड,
इन्दौर – ४५२००७ (म.प्र.)
फोन– ०७३१–२४३०७०७ मोबाइल– ०९४०६८–२६५६३

विशेष– फोटो नेट से PIB.com या ४३ अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह गोवा से लेने की कृपा करें।

कृपया उपरोक्त आलेख छपने पर समाचार पत्र–पत्रिका की एक प्रति अवश्य भेजें